राधेश्याम तर्ज का संगीत रस अभी भी है पहाड़ में

डॉ. पंकज उप्रेती
प्रभारी संगीत विभाग
राजकीय महाविद्यालय टनकपुर (चम्पावत), उत्तराखण्ड
Email: editorpighaltahimalay@gmail.com

संगीत सागर में गायन-वादन की अपार विधाए है । छन्द, रस, काल, ताल अनेकानेक प्रकार से इन्हें तराशा जाता रहा है। इन्हीं में से एक विधा राधेश्याम भी है । दरअसल 'राधेश्याम'के नाम पर यह छन्द कभी बेहद लोकप्रिय रहे हैं । राधेश्याम तर्ज का संगीत रस अभी भी पहाड़ में है। नेपाल की श्री सरकार से 'कथावाचस्पति' की पदवी प्राप्त कीर्तनकलानिधि, काव्यकलाभूषण, श्री हरि-कथा-विशारद, कविरत्न राधेश्याम जी की 'राधेश्याम रामायण' का प्रयोग उत्तराखण्ड की रामलीला में होता है।1 इसके अलावा भी यह शैली नाट्य प्रदर्शनों में सुनाई देती है ।

पंडित राधेश्याम जी बरेली के गौरव तो थे ही, साथ ही उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली। वह बचपन में अपने पिताजी के साथ 'रुक्मणी मंगल की कथा' कहने निकट की बस्ती चंदौसी में गये, जहाँ कथा के बीच-बीच में आने वाले गाने इन्होंने स्वयं ही गाये थे। इन गानों पर जनता मंत्रमुग्ध हो गई। इसी प्रोत्साहन का परिणाम हुआ कि राधेश्याम जी ने नाटकों के गानों की तर्जों पर अनेक भजन बनाए। उन्होंने रामकथा के अंशो पर अपने राधेश्यामी छन्दों की रचना की। इन छन्दों की लोकप्रियता ने उन्हें लिखने के लिये प्रेरित किया और 'राधेश्याम रामायण'2 सम्पूर्ण 25 भाग लिखकर उन्होंने अनुपम निधि जगत को सौंपी। यह कथावाचक जी भक्त कवि के रूप में जन-मन में व्याप्त रहे हैं। साथ ही नाटककार के रूप में साहित्य जगत में भी उनका स्थान है। उनकी अपनी गायन शैली थी और जब वह कथा करने लगते तो उनकी इस शैली में मोती से झरते थे। सुरेन्द्र मोहन मिश्र3 लिखते हैं- ''पंडित जी ने जब से होश सम्हाला तब हिन्दी का लोकसाहित्य लोथी प्रेसों के द्वारा प्रकाशित होकर जन साधारण में अपना स्थान बना चुका था। हाथरस की 'संगीत' और फतहगढ़ की छपी 'आल्हा' गाँव-गाँव पहँच चुकी थी। लोक साहित्य की यह धरा विक्टोरिया के राज्यकाल में अनवरत बहती रही। लोक साहित्य का स्वर्णकाल इस युग को कहा जा सकता है।''

देशभर के कई कथावचक राधेश्याम रामायण को गाकर आजीविका और सम्मान पाते रहे हैं। सन् 1914 के प्रथम महायुद्ध और 1940 के द्वितीय महायुद्ध के मध्यवर्ती काल में राधेश्यामी छन्द जनमानस पर छाया रहा। बनासर के माधव शुक्ल ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपनी कविताओं का गायन इसी छन्द-तर्ज पर किया। बरेली के निवासी रामसहाय 'तमन्ना' कथावाचक राधेश्याम जी के मित्रों में से थे। इन्होंने 'धुरव चरित्र' की रचना राधेश्यामी छन्द में की थी। चन्दौसी निवासी लाला रामस्वरूप ने रामरूप नाम से कविता की थी और राधेश्यामी छन्द में सम्पूर्ण महाभारत को प्रस्तुत किया। पीलीभीत निवासी ज्वाला प्रसाद ने 'महिषासुर बध' की रचना इस छन्द में की। कथावाचक के अनुज

मदन मोहन शर्मा ने राधेश्यामी छन्द में स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र रचा। पं. रामनारायण पाठक, जो राधेश्याम प्रेस के मैनेजर थे उनके द्वारा 'भ्रमर' मासिक का सम्पादन किया गया। यह राधेश्यामी छन्द लिखने में सिद्धहस्त थे।4 इसके अतिरिक्त भी देश के अनेक लोक कलाकारों, कवियों ने इसी छन्द पर अपनी रचनाएं करके लोकप्रियता प्राप्त की। राधेश्याम तर्ज की लोकप्रियता इतनी अधिक रही है कि इसे नाटकों के द्वारा जन-जन तक पहुंचा दिया गया। पहाड़ की रामलीला भी इसके प्रभाव में रही। राग-रागनियों में होने वाली रामलीला में राधेश्याम तर्ज का तड़का इसे सुन्दर बना देता है।

कथावाचक पं.राधेश्याम जी लिखित रामायण में यदि दृष्टिपात किया जाय जो पता चल जाता है कि यह अनुपम निधि है। प्रार्थना, मंगलाचरण, प्रस्तावना से शुरु होकर जब वह बाल काण्ड में आते हैं तो राधेश्याम तर्ज की लय का चमत्कार वहीं से दिखाई देने लगता है-

''भक्तो तुम सब निश्चिन्त रहो, अब तुम्हें न कोई भय होगा।
यह धरती होगी रंगभूमि धरणीधर का अभिनय होगा।।
सुन सकते नहीं कान मेरे, अत्यधिक पुकार अधीनों की।
देखेगा शीघ्र दुष्ट मण्डल, क्या प्रवल हाय है दीनों की।।''5

राक्षसी अत्याचार से घिरी धरती पर प्रभु के अवतार का गायन राधेश्याम तर्ज पर जोश भरने वाला है। इसी प्रकार राम प्रसंग के समय की पंक्तियों का उदारण प्रस्तुत है-

''गुरुवर के साथ राम-लक्ष्मण यूं जनवासे में आते हैं।
रवि, भौम-वृहस्पति को लेकर जिस भाँति लग्न में आते हैं।।
अत्यन्त भक्ति से भरा हुआ था नमन गुरु का शिष्यों का।
अत्यन्त प्रेम से पगा हुआ था मिलन पिता से पुत्र का।।
बोले जब विश्वामित्रा- 'नृपति, अपनी सम्पत्ति सँभालों अब।
फिर नहीं हिसाब करूँगा मैं सब भाँति परखालो अब।'' 6

राधेश्याम गायन की जोशीली शैली पूरी सभा को खिला देती है। अयोध्या काण्ड के वन गमन प्रसंग से उदाहरण प्रस्तुत है-

''अच्छा सरकार पूछते हैं, तो कहता हूँ संशय अपना?
भयभंजन मेरे सम्मुख हैं, फिर क्यों रहने दूं भय अपना?
सुनता हूँ मैं यह जादू है-राजाजी के पद-पंकज में।
पत्थर में जान डालने की है शक्ति महान चरण रज में।।''7

इस प्रकार यदि हम राधेश्याम रामायण के पन्ने पलटते जाएं तो हम पाते हैं कि ज्यों ज्यों कथा आगे बढ़ती जाती है, यह एक प्रकार छन्द होने के बावजूद श्रोताओं को बांधे रखने में सक्षम है। क्योंकि संगीत के साथ जब काव्यधारा भी जुड़ जाती है तो वह दुगुणित आनन्ददायक होती है। लंका काण्ड से एक उदाहरण प्रस्तुत है-

‘‘धिक्कार तुम्हारे शस्त्रों पर, लम्बे चैड़े आकारों पर।
जो दस-दस बीस-बीस बानर-कर जाएँ काम हजारों पर।।
आराम पसन्दो, आलसियों, क्यों दूध लजाते हो अपना?
लंका विदेशियों को देकर अस्तित्व मिटाते हो अपना?’’8

राम और रावण सेना में छिड़े घनघोर युद्ध में जब राम का दल शक्तिशाली मालूम होता है तो असुरपति अपने सैनिकों को सम्बोधित कर जोश भरता है ताकि वह वानर सेना से भयभीत न हों। पहाड़ (उत्तराखण्ड) की रामलीला शास्त्रीय रागों पर आधारित है परन्तु इसके पूरे स्वरूप में जो नाट्यक्रम है, वह अपने में बहुत कुछ समेटे हुए है। दोहा, चैपाई, पारसी थियेटर का प्रभाव, पुरानी धुनें, रागों की छाया। इसी में राधेश्याम का रंग भी चढ़ा हुआ है। एक उदाहरण-

‘‘मैं यज्ञ जिस समय करता हूँ, दुःख मुझको निश्चर देते हैं।
पूजा सामग्री हवन कुण्ड, सब नष्ट-भ्रष्ट कर देते हैं।।
याज्ञिक उनसे यदि युद्ध करें तो यज्ञ-कार्य सब खण्डित है।
फिर धन्वा ले न लडूंगा मैं, यह प्रण भी मेरा निश्चित है।
असुरों के अत्याचारों से अकुलाया, घबराया हूँ मैं।
रक्षा, सहायता दो चीजें- तुमसे लेने आया हूँ मैं।।’’9

(विश्वामित्र मुनि राजा दशरथ के पास जाकर जब राम-लक्ष्मण को उनसे माँगते हैं, तब इस प्रकार राधेश्यामी तर्ज पर पंक्तियों का गायन होता है।)

पहाड़ की रामलीला में राग-रागनी के अलावा चैपाई-दोहे, खड़ी-तर्ज याने राक्षसी तर्ज, थियेटर की धुनों के बीच एकाएक राधेश्याम सुनाई दे तो उसका अलग ही रस श्रोता पाते हैं। अंगद-रावण सम्वाद के दिवस रामलीला देखने वाले दर्शकों की विशेष भीड़ जुट जाती है। एक उदाहरण जिसमें अंगद अपना परिचय रावण को देता है-

‘‘मैं उस बाली का बेटा हूँ, जो अपने बल पर डटता था।
तुझ जैसे रावण वीरों को छः मास कोख में रखता था।।
हम उनके सेवक हैं जिसने पत्थर तैराये पानी में।
आने का मार्ग बना डाला सारी लंका रजधानी में।।
अब समय हमारा आता है देखो तुझको बतलायेंगे।
लंका में करके कत्लेआम जगदम्बा को ले जायेंगे।’’10

अंगद-रावण सम्वाद में चैपाई खड़ी तर्ज पर रावण कहता है-

''अंगद तुहि बालि कर बालक। उपजेउ बंश अनल कुल घालक।।
गर्भ न गिरेउ वृथा तुम जाये। निज मुख तापस दूत कहाये।।
अब कहूँ कुशल बालि कह अहई। प्रेम बिवश मम हृदय दहई।।''11

इसी में रावण राधेश्याम में भी कहता हुए सुनाई देता है-

''अंगद हे अंगद क्या तू ही उसी बाली का बेटा है।
क्या तू ही बाँस की ज्वाला है, क्या तू बाली का घालक है।।
यदि तेरा गर्भ नष्ट होता, तो होता आज अकाल नहीं।
तपसी का दूत कहाने में, आती है तुझको लाज नहीं।।
संहारा जिसने बालि बाप, धिक है उसका तू दास हुआ।
जो मित्र पिता का है तेरे, उस पर न तुझे विश्वास हुआ।।''12

इस प्रकार विख्यात लेखक, कवि, कथावाचक, कीर्तनकलानिधि, काव्यकलाभूषण, हरि-कथा विशारद पं. राधेश्याम जी का मान-सम्मान उनकी कथा शैली का प्रभाव पहाड़ की रामलीला के माध्यम से सम्पूर्ण पर्वतीय प्रदेश में है। यहाँ तक कि लोकनाट्य12 की विधा में राधेश्याम को एक प्रकार का संगीत ही माना जाता है। इसका छन्दबन्धन इतना सुन्दर है कि आम दर्शक भी समझ जाता है और कहता है- 'राधेश्याम' में गाया जा रहा है।

सन्दर्भ-

1. उप्रेती, पंकज. *कुमाऊँ की रामलीला: अध्ययन एवं स्वरांकन*, पिघलता हिमालय प्रकाशन, शक्ति प्रेस, हल्द्वानी, 2008
2. कथावाचक, राधेश्याम. *राधेश्याम रामायण,* 69वां संस्करण, प्रकाशक- श्री राधेश्याम पुस्तकालय बरेली, 1982
3. अमर उजाला, 22 जुलाई सन् 1990, रविवासरीय पृष्ठ 2
4. वही
5. कथावाचक, राधेश्याम. *राधेश्याम रामायण,* 69वां संस्करण, प्रकाशक- श्री राधेश्याम पुस्तकालय बरेली, 1982 पृष्ठ- 9
6. वही, श्रीरामकथा संख्या-4 बाल काण्ड विवाह प्रसंग, पृष्ठ- 7
7. वही, श्रीरामकथा संख्या-7 अयोध्या काण्ड वन-यात्रा, पृष्ठ- 11
8. वही, श्रीरामकथा संख्या-17 मेघनाथ का शक्ति-प्रयोग, पृष्ठ- 5
9. उप्रेती, पंकज. *कुमाऊँ की रामलीला: अध्ययन एवं स्वरांकन*, पिघलता हिमालय प्रकाशन, शक्ति प्रेस, हल्द्वानी, 2008, पृष्ठ- 48

10. वही, पृष्ठ- पृष्ठ- 161

11. उप्रेती, पंकज. *कुमाऊँ की रामलीला: अध्ययन एवं स्वरांकन*, पिघलता हिमालय प्रकाशन, शक्ति प्रेस, हल्द्वानी, 2008, पृष्ठ- 162

(अ) उप्रेती, पंकज. *कुमाऊँ की रामलीला: अध्ययन एवं स्वरांकन*, पिघलता हिमालय प्रकाशन, शक्ति प्रेस, हल्द्वानी, 2008, पृष्ठ- 48

(ब) राधेश्याम रामायण, पं. राधेश्याम, श्रीरामकथा संख्या-16 अंगद-रावण का सम्वाद, पृष्ठ- 12

12. पिघलता हिमालय यूट्यूब चैनल में 'पहाड़ की रामलीला' का दृश्य देखा जा सकता है जिसमें सुमन्त राम वन गमन के समय गाते हुए मंचन करते हैं।